DWR/TP01/2025

20वाँ गाजरघास जागरूकता सप्ताह

16–22 अगस्त, 2025

गाजरघास (*पार्थेनियम हिस्टेरोफोरस*) जिसे आमतौर पर कांग्रेस घास, सफेद टोपी, असाड़ी, गजरी, चटक चांदनी आदि नामों से जाना जाता है, एक विदेशी आक्रामक खरपतवार है। भारत में पहली बार 1950 के दशक में दृष्टिगोचर होने के बाद यह विदेशी खरपतवार रेल्वे ट्रेक, सड़कों के किनारे, बंजर भूमि, उद्यान आदि सहित लगभग 35 मिलियन हेक्टेयर फसलीय और गैरफसलीय क्षेत्रों को प्रभावित कर रहा है।

यह एक वर्षीय शाकीय पौधा है जिसकी लम्बाई 1.5 से 2.0 मीटर तक होती है। यह मुख्यतः बीजों से फैलता है। यह एक विपुल बीज उत्पादक है और इसमें लगभग 25,000 से 50,000 बीज/पौधा पैदा करने की क्षमता होती है। बीज अपने कम वजन के कारण हवा, पानी और मानवीय गतिविधियों द्वारा आसानी से एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंच जाते है।

गाजरघास को सबसे अधिक खतरनाक खरपतवारों में गिना जाता है क्योकि यह मनुष्यों और पशुओं में त्वचा रोग (डरमेटाइटिस), अस्थमा और ब्रोंकाइटिस जैसी स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बनता है। इसके सेवन से पशुओं में अत्यधिक लार और दस्त के साथ मुंह में छाले हो जाते हैं। स्वादहीन होने के कारण इसका उपयोग पशुओं के चारे के रूप में नही किया जा सकता है, साथ ही घास के मैदानों, चरागाहों और वन क्षेत्रों में इसके फैलने से चारे की उपलब्धता धीरे-धीरे कम होती जा रही है।

नियंत्रण के उपाय

- चूंकि गाजरघास एक जन मानस की समस्या है, इसलिए इसे नियंत्रित करने के लिए किसानों, नगर पालिकाओं, कॉलोनी वासियों, गैर सरकारी संगठनों, स्कूली बच्चों आदि सहित समाज के सभी वर्गों के द्वारा सामुदायिक पहल की आवश्यकता है ताकि वे अपने आसपास को गाजरघास से मुक्त रख सकें।
- गाजरघास के दुष्प्रभाव एवं इसके प्रबंधन के बारे में लोगों को जागरूक करने के लिए बैठकें, प्रशिक्षण, प्रदर्शन आदि आयोजित करें।
- फूल आने से पहले इस खरपतवार को उखाड़कर कम्पोस्ट या वर्मी कम्पोस्ट बना लें।
- गाजरघास को विस्थापित करने के लिए चकोड़ा, गेंदा जैसे स्व-स्थायी प्रतिस्पर्धी पौधों की प्रजातियों के बीज का छिड़काव करें।
- अकृषित क्षेत्रों में संपूर्ण वनस्पति नियंत्रण के लिए ग्लाइफोसेट (1.0–1.5%) जैसे शाकनाशी का छिड़काव करें और मिश्रित वनस्पति में गाजरघास के नियंत्रण हेतु मेट्रिब्यूजिन (0.3–0.5%) या 2,4-डी (1.0–1.5%) का छिड़काव उसमें फूल आने से पहले करें, ताकि घास कुल के पौधों को बचाया जा सकें। फसलों में शाकनाशियों के प्रयोग से पहले खरपतवार वैज्ञानिक/विशेषज्ञ से परामर्श अवश्य कर लेना चाहिए।
- जुलाई-अगस्त के दौरान गाजरघास संक्रमित क्षेत्रों में जैविक कीट *जाइगोग्रामा बाइकोलोराटा* (मेक्सिकन बीटल)को छोड़ें।

अपील

गाजरघास आज विश्वभर में एक विकराल और तेजी से फैलने वाला खरपतवार बन चुका है, जो कृषि उत्पादकता, मानव और पशु स्वास्थ्य तथा जैव विविधता को भारी क्षति पहुँचा रहा है। भारत में यह समस्या अब गंभीर रूप धारण कर चुकी है। यह खरपतवार फसली एवं गैर-फसली क्षेत्रों, नगरीय बस्तियों, सड़कों के किनारे, तथा संस्थानों के परिसरों में तेजी से फैल चुका है। **विकसित कृषि संकल्प अभियान 2025** के दौरान भी इसे एक प्रमुख समस्या के रूप में पहचाना गया है। इस खरपतवार के नियंत्रण के लिए जन-जागरूकता, समुचित प्रबंधन और समाज के सभी वर्गों के सक्रिय भागीदारी की आवश्यकता है। इसका प्रभावी नियंत्रण बहु-आयामी प्रयासों से ही संभव है, जिसमें विभिन्न क्षेत्रों की सहभागिता आवश्यक है। साथ ही जनता को गाजरघास के कारण स्वास्थ्य पर, पड़ने वाले प्रतिकूल प्रभावों के बारे में भी जागरूक करना अत्यंत आवश्यक है।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि **भा.कृ.अनु.प.-खरपतवार अनुसंधान निदेशालय, जबलपुर** वर्ष 2004 से प्रत्येक वर्ष **16 से 22 अगस्त** के मध्य **"गाजरघास जागरूकता सप्ताह"** का आयोजन करता आ रहा है, ताकि इस खतरनाक खरपतवार के प्रबंधन और उन्मूलन के लिए जनसाधारण को प्रेरित किया जा सके। जैसा कि हम जानते हैं, मनुष्य, पशु, पौधे और पर्यावरण का स्वास्थ्य आपस में गहराई से जुड़ा हुआ है और **"वन हेल्थ"** (एक स्वास्थ्य) एक ऐसा समन्वित दृष्टिकोण है जो इन आपसी संबंधों को मान्यता देता है। अतः बेहतर पारिस्थितिक मानक बनाए रखने के लिए गाजरघास उन्मूलन इस दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है। **भा.कृ.अनु.प.-खरपतवार अनुसंधान निदेशालय, जबलपुर** ने फसली एवं गैर-फसली क्षेत्रों में गाजरघास के प्रबंधन हेतु अत्यंत प्रभावी तकनीकों का विकास किया है। हाल के वर्षों में इस खरपतवार की व्यापकता और आक्रामक प्रवृत्ति को देखते हुए इसे **स्वच्छ भारत अभियान** की एक प्रमुख गतिविधि के रूप में भी शामिल किया गया है। अतः भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सभी संस्थानों, विश्वविद्यालयों और कृषि विज्ञान केंद्रों से अपेक्षा की जाती है कि वे अपने परिसरों को "गाजरघास मुक्त" बनाएँ।

इस वर्ष भी निदेशालय द्वारा **16 से 22 अगस्त 2025** के बीच पूरे देश में **20वाँ गाजरघास जागरूकता सप्ताह** का आयोजन किया जा रहा है। मैं सभी संस्थानों, विश्वविद्यालयों और कृषि विज्ञान केंद्रों के वैज्ञानिकों / अधिकारियों / कर्मचारियों से अनुरोध करता हूँ कि वे उक्त सप्ताह के आयोजनों में सक्रिय रूप से भाग लें और **"स्वच्छ भारत अभियान"** की भावना के अनुरूप अपने परिसर को **"गाजरघास मुक्त"** बनाने का संकल्प लें।

(एम.एल. जाट)
सचिव, कृषि अनुसंधान और शिक्षा विभाग
एवं महानिदेशक, भा.कृ.अनु.प.

गाजरघास मिटाना है। स्वास्थ्य, पर्यावरण एवं जैव-विविधता बचाना है।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें : **डॉ. जे.एस. मिश्र,** निदेशक
भा.कृ.अनु.प.-खरपतवार अनुसंधान निदेशालय, जबलपुर - 482004 (म.प्र.)
फोन : (0761) 2353934, वेबसाइट : https://dwr.org.in/

प्रस्तुतकर्ता: अर्चना अनोखे, दीक्षा एम.जी., दीपक पवार, जे.के. सोनी, पी.के. सिंह एवं संदीप धगट